सामरी की ज्वाला
सुपर कमांडो ध्रुव

सामरी की ज्वाला
कथा-चित्र- अनुपम सिन्हा
सम्पादन - मनीष गुप्ता
सुलेख- सुनील
जीवन के कई रूप होते हैं। मनुष्य, पशु, पेड़-पौधे-
और वे आकृतियां, जिनको हम राक्षस, प्रेत और पिशाचों का नाम देते हैं।
कंकाल-
-त्रिकाल-
-और शाकाल से तुम लोग नहीं बच सकते।
ध्रुव! मुझे बचाओ! मुझे डर लग रहा है।
घबराओ मत, नताशा! मैं तुमको कुछ नहीं होने दूंगा।

पर इससे तो मैं छूट भी नहीं पा रहा हूं।
ध्रुव की फैली आंखों के सामने त्रिकाल और नाकाल ने नताशा को घेर लिया—
ध्रुव..बचाओ!
मेरे हाथ-पैरों को क्या हो रहा है?
मैं इनको हिला क्यों नहीं पा रहा हूं!
क्या मुझे लकवा मार रहा है?
आऽऽऽ!
आक!
आक!
मेरा दम क्यों घुट रहा है?

नहीं!ऽऽऽ!
ओह!
हैलो!
हो न?
ध्रुव!
गुड नाइट,
नताशा!
हा हा हा!
बहुत चाहती है
ध्रुव को।
घबरा
मत!

अगले दिन भी- ध्रुव के दिमाग में वही स्वप्न घूम रहा था।
और वह इस बात पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रहा था...
तीन रातों तक लगातार एक ही सपना।
यह संयोग नहीं हो सकता।
यहीं है वह वीर योद्धा। कुमार ध्रुव।
मुझे इसी की तलाश थी।
अब मैं इससे प्रार्थना...।
अरे!
और ध्रुव का ध्यान भी।
आतंकवादी!
धमाकों की आवाज़ों ने उस स्त्री का ध्यान भंग कर दिया।
पर ये इतनी जल्दी अपनी पहली वारदात करेंगे, इसका मुझे अंदाज़ा नहीं था।
पापा ने मुझे खबर दी थी कि कुछ कट्टर आतंकवादी राजनगर में हंगामा करने के लिए आ चुके हैं।

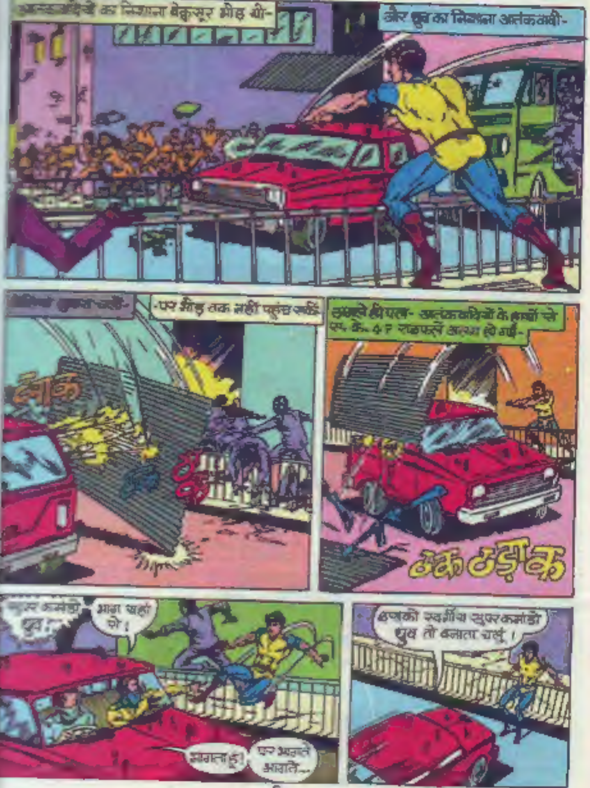
का निशाना बेकसूर भीड़ थी-
और ध्रुव का निशाना आतंकवादी-
-पर भीड़ तक नहीं पहुंच सकीं
आतंकवादियों के हाथों से ए. के. 4 7 राइफलें अलग हो गईं-
ठड़ाक
सुपर कमांडो ध्रुव!
भाग यहां से!
भागता हूं!
पर भागते भागते...
आपको स्वर्गीय सुपर कमांडो ध्रुव तो बनाता चलूं!

ध्रुव को आतंकवादियों का इरादा भाँपने में थोड़ी देर हो गई-
गाड़ी उसके शरीर से कुछ ही फुट की दूरी पर थी-
कि तभी...
सांय
एक लपट और चमकी-
और कार आग के शोलों में घिर गई-
अब ध्रुव अपने को बचाने के सिवाय, और कुछ नहीं कर सकता था-
धड़ाम
आग की लपट उस गली से आई है।
पर ऐसी प्रलयंकारी लपट कौन फेंक सकता है?

गली में मुड़ते ही, वह 'कौन' ध्रुव के सामने थी-
और ध्रुव उसकी तरफ लपका था।
नताशा!
महापराक्रमी कुमार ध्रुव को राजकुमारी सवरीना प्रणाम करती है।
नहीं, यह नताशा नहीं है।
इसकी आँखें लाल हैं, जबकि नताशा की आँखें नीली हैं।
वैसे बाकी शक्ल हूबहू मिलती है।
तुम कौन हो, सवरीना? यह अद्भुत शक्ति तुम्हारे पास कैसे आई?
हम लोगों को यह शक्ति 'सामरी की ज्वाला' से प्राप्त होती है।
पर इस वक्त हम लोगों पर भयंकर संकट आया हुआ है!
जिससे हम लोगों को सिर्फ आप ही छुटकारा दिला सकते हैं।
मैं?
पर कैसे?
मैं बताती हूं।
सवरीना की आँखों से एक ठंडी लपट ने निकलकर ध्रुव के सिर को घेर लिया...
-और ध्रुव के दिमाग में एक दृश्य उभरने लगा-
मेरे दिमाग में एक ज्वालामुखी की तस्वीर उभर रही है।
पर- पर यह तो ज्वालामुखी है जो मुझे सपने में लगातार तीन बार दिखा चुका है।
दृश्य बदलने लगा-

दृश्य गायब इसलिए हो रहा था, क्योंकि स्वरीना का ध्यान किसी और चीज ने खींच लिया था-
कालूगा!
अब मुझे भीषण ज्वाला दिख रही है, जैसे-
अरे! यह दृश्य गायब कैसे हो रहा है?
पर इसका दिमाग तो उसी दुष्ट के कब्जे में था।
यह जरूर मुझ पर हमला करने आया है!
ताकि मैं ध्रुव को
तपते भाले की पैनी नोक स्वरीना के सीने की तरफ लपकी।
पर ध्रुव के लिए एहसान उतारने का वक्त आ गया था।

पर इसके अंदर भी सबरीना जैसी ही शक्तियां हैं।
शायद सबरीना इसी संकट का ज़िक्र कर रही थी।
ओह! इसने तो जीते जी मेरी चिता बनाने की ठान ली है।
अगर मैं किसी तरह से इसको बेहोश कर सकूं...
—तो वार... अरे!
पत्थर, कालूना के शरीर तक पहुंचने से पहले ही मोम की तरह गल गया।

और एक ज्वाला ने ध्रुव को ज़मीन पर फेंकने के लिए मजबूर कर दिया

और जो मेरी मदद कर सकती है, वह बेहोश पड़ी है
हिनहिनहिन

और हमारे नियम इसकी अनुमति नहीं देते हैं।
क्योंकि अब मुझ पर भी बेहोशी छा रही है
सामरी!

INDIAN TIMES
मज़ाक छोड़ो नताशा
वह सीरियस मसला है
कंघी करने

EDITOR
ज्वालामुखी?

सामरी!
सामरी की ज्वाला को।

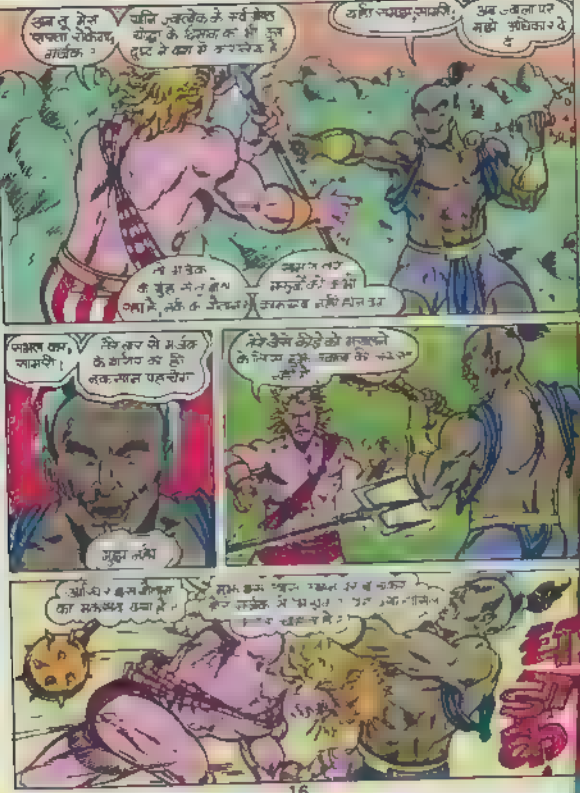
अब ज्वाला पर मुझे अधिकार दे दे
सम्भल कर, सामरी!

आह!

अब उसका गर्जक के शरीर से कोई काम नहीं था।
मैं अपने कमरे में चेक अरे!
यह क्या है ध्रुव?
चंडकाल!
तुम स्वर्ण लहरों से बचकर निकल आए?

पर इस रूप में, मैं खुद एक तिनका तक नहीं उठा सकता था.
इसके लिए मुझे अपनी शैतानी सेना की जरूरत थी।
जिसमें नहा कर मेरी शक्ति
ककाल, त्रिकाल, गाकाल!
आओ!
आह,
तीनों शैतान!

हेलीकॉप्टर तेज़ी से पानी की तरफ गिरने लगा,
मक्खन की तरह पिघल गईं

धुप

जाने क्या हुआ ?

आश्चर्य

परन्तु
शायद आसपास कोई
नहीं आ रहा है

पर चंद्रकांत की शैतानी सेना ने

अब दो महाशक्तिशाली प्राणी एक-दूसरे के सामने थे।
और जीत किसकी होगी, यह कहना मुश्किल था

ज्वालामुखी के अन्दर.

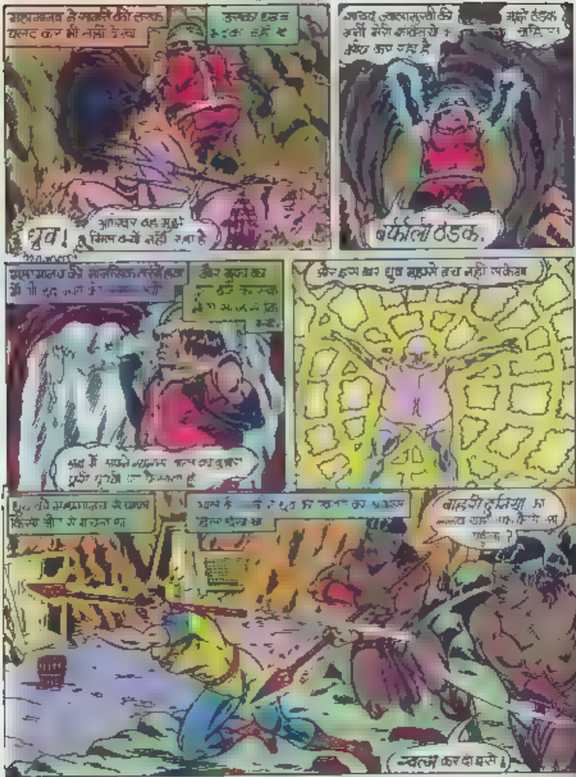
ध्रुव!
आखिर वह मुझे मिल क्यों नहीं रहा है
बाहरी दुनिया
खत्म कर दो इसे !

इनके भाले ठीक कछुआ के भाले जैसे ही हैं
कुमार ध्रुव !
आप मुझे कैसे जानते हैं ?

हा हा हा
हा हा हा

तुम हो, ध्रुव!

सामरी!
पर कैसे?
इसको रोको!

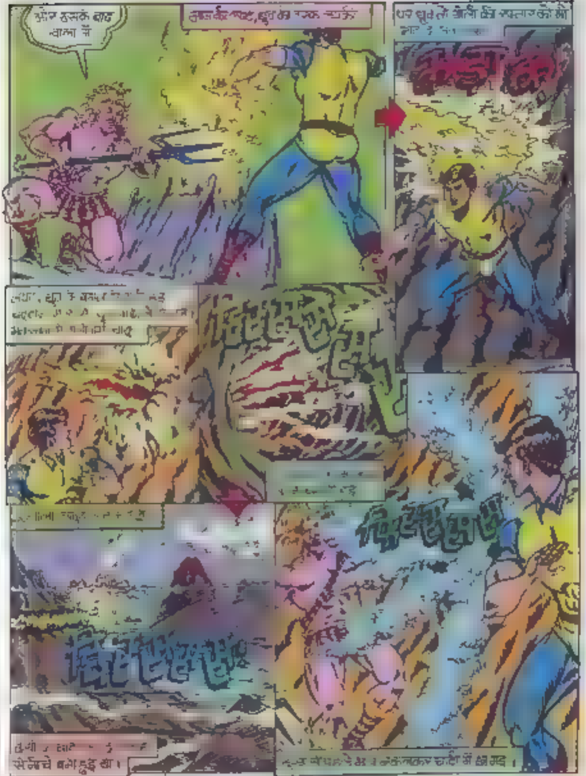

यह क्या ?

और उसके
सेकंड की देर और होती तो

अरे!
और-
आह!

आह.

और वह वहीं आ गिरा-

महामानव !

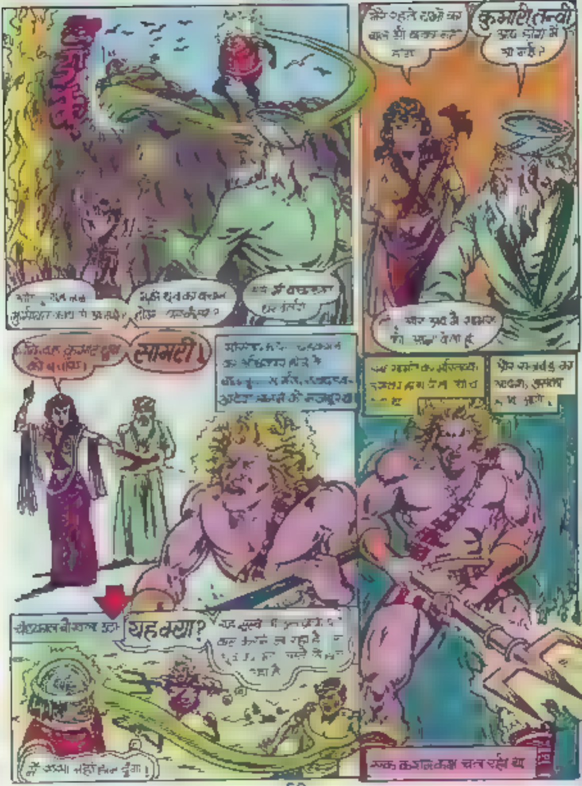
कुमारी तन्वी
सामरी!
यह क्या?

अब चंडकाल, महामानव के दिमाग पर कब्जा करने की कोशिश करेगा
धन्वतंग, सावधान!
महामानव का मस्तिष्क, ऐसा मनोवैज्ञानिक ऊर्जा पैदा करने वाले एक हाई पावर जेनरेटर की तरह था

आह!
?

आऽऽह!

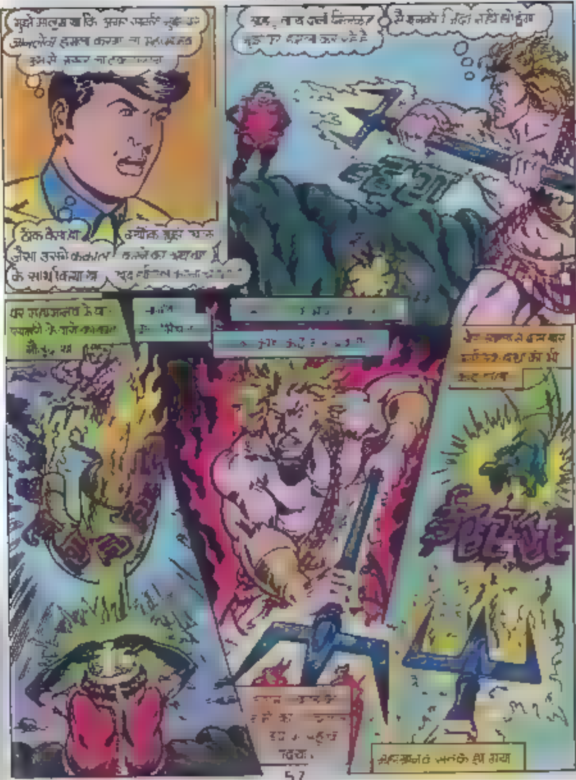

उसने अपने हाथ को
वार करने के लिए ऊपर उठाया

अगर मेरा ख्याल सही है, तो इस ज्वाला को बुझाया जा सकता है।
और इस ज्वाला के बुझते ही...
स्वामी की सारी शक्तियां समाप्त हो जाएंगी।
विशाल चट्टान ने गिरकर पानी भर रहे गड्ढे का मुंह बंद कर दिया।
पूरी घाटी में, तेजी से पानी भरने लगा।
स्वामी के कुछ संभल पाने से पहले ही-
पानी की तेज और मोटी धारों से, पानी का स्तर, ज्वाला तक आ पहुंचा।
ज्वाला बुझने से पहले एक बार कसकर चमकी।
और जब वह चमक खत्म हुई।
?

ध्रुव इस हीरे को अच्छी तरह से पहचानता था।
ओह!

गड़ गड़ गड़ गड़ड़ गड़ड़
...ज्वाला फिर से धधक उठी।
पर आपकी सहायता के लिए आपका फिर से धन्यवाद।
यह क्या कर रहा है, ध्रुव?
रिपोर्ट तैयार हो रही है,
मेरा नाम तक भूल गए।
ज्वाला के बुझने से इन पर से हमारा प्रभाव जाता रहा है, ध्रुव!

वैसे भी, हमें इनको यहां रोकने का कोई अधिकार नहीं था।
तुमने!
पर हम वापस कैसे जाएंगे?
हैलीकॉप्टर तो टूट गया है।
पर क्यों?
नहीं, मेरा मतलब...
इसीलिए, आगे हम कुछ सुन नहीं सके—
—क्योंकि द्वार बंद हो चुका था।
समाप्त